Topic-Liberalism

D-3(H) P-8D

Date-26-4-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.sci.

उदारवाद

मूल्यांकन (2) :- वस्तुतः उदारवाद अपने उद्गम से लेकर आज तक अनेक रूपों में तब्दील हुआ है फिर भी इसका वजूद आज भी विश्व के सारे राजनीतिक व्यवस्थाओं में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से देखा जा सकता है। इस विचारधारा की व्यापक आलोचना भी हुई है। लेनिन तो सभी उदारवादियों को आराम-कुर्सी पर बैठे रहने वाले घूर्त कहा है। कुछ विचारक इसे विरोधाभासी दर्शन भी कहते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उदारवाद महत्वहीन विचारधारा है। आज भी कई मायनों में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था।

उदारवाद के व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानव अधिकार, विधि का शासन, धर्म-निरपेक्ष दृष्टिकोण आदि सिद्धांत इसके महत्व को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं। मानवतावाद का समर्थक होने के कारण आज भी उदारवाद शाश्वत महत्व की विचारधारा है। स्वतंत्रता व समानता के आदर्श पर जोर देने के कारण यह सभी प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली वाले देशों में समर्थन को प्राप्त है।

अंतर्राष्ट्रीयता और विश्व-शांति के विचार पर जोर देने के कारण यह अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भी अपना स्थान बनाए हुए है। साम्राज्यवाद व निरंकुशवाद के किसी भी रूप का विरोधी होने के कारण यह अपने जीवन के प्रारंभिक क्षणों से ही मानव चिन्तन का प्रमुख केन्द्र-बिन्दु रही है। सत्य तो यह है कि उदारवादी दर्शन ने अपने विकास की

लम्बी यात्रा में समय-समय पर आर्थिक नीति निर्धारकों, राजनीतिज्ञों व समाज सुधारकों के चिन्तन को प्रभावित किया है।

आधुनिक समय में यह समाजवाद की विचारधारा से गहरा सरोकार रखती है। आज उदारवादी राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत को सीमित करना चाहते हैं और अंतर्राष्ट्रीयता व विश्व शांति के विचार का समर्थन करते हैं। आज उदारवाद मुक्त मानव के सिद्धांत का विरोध करता है और समाज हित में राज्य के आधिकारिक हस्तक्षेप को उचित ठहराता है।

आज उदारवाद जैसे सकारात्मक राज्य के सिद्धांत का पोषक है जो समाजवाद को आगे बढ़ाने वाला है। आज समाजवाद को ही 'उदारवाद का वैध उत्तराधिकारी' माना जाता है। आधुनिक उदारवादी राज्य को लोक-कल्याण का एक साधन मानते हैं अर्थात उनकी दृष्टि में राज्य सामान्य हित साधन की एक संस्था होता है

═